८७ जीने का क्रम- विचार क्रम, अनुभव क्रम

०५-०६-१३

जीने का क्रम

जीने का क्रम अपने आप में तीन प्रमाणों के साथ-साथ है | प्रमाणों के मूल में अनुभव रहा है और जागृत चेतना रहा है | अनुभव सह-अस्तित्व में होना देखा गया है | सह-अस्तित्व अपने में व्यापक रूपी ऊर्जा में सम्पृक्त जड़ चैतन्य प्रकृति के रूप में है | जड़ चैतन्य प्रकृति एक-एक के अर्थ में है | व्यापकता अंत विहीन दूर-दूर तक समान है | अर्थात जहां प्रकृति है, जहां प्रकृति नहीं है | प्रकृति का मतलब चारों अवस्था का स्वरूप जहां रहता है वहाँ भी सत्ता है, जहां नहीं है वहाँ भी है | इस प्रकार सत्ता व्यापक कहने का मतलब समझ में आता है | प्रकृति का होना कहीं कहीं है | जैसा धरती, धरती का वातावरण में प्रकृति का रहना देखा जाता है | प्रकृति को स्थूल और सूक्ष्म रूप में, व्यापक वस्तु को अखण्डता के रूप में समझा जाता है | इस क्रम में व्यापक और एक-एक अविभाज्य होना समझ में आता है | ऐसा अविभाज्य वस्तु को अथवा अविभाज्य रूप मे सहअस्तित्व नाम है | ऐसे सह-अस्तित्व में अनुभव होना ज्ञानावस्था की इकाई में ही होता है | ज्ञानावस्था में इकाई मानव ही है | इसे भले प्रकार से समझा है क्योंकि समझने वाला, शोध करने वाला, अनुसंधान करने वाला मानव ही है | मानव के अलावा कोई जानवर, झाड़, पौधा, मिट्टी, पत्थर, धातु, मणि अनुसंधान करता हुआ नहीं मिलता, न ही शोध करता हुआ | इस विधि से मानव को शोध और अनुसंधान विधि से ज्ञानावस्था नाम दिया | रूढ़िवादी विधि से समुदाय बताया है | अनुभव विधि से मानव को एक जाति बताया है |

इसी के पुष्टि में मानव का दाँत, नाखून, आँते, पानी पीने का विधि को भी अध्ययन कराया जाता है | शाकाहारी जीव संसार ओठ से पानी पीते हैं | नख और नाखून दूसरे को नोचने के रूप में होते हैं | आँते शाकाहारी जीवों में बड़ी तथा मांसाहारी जीवों में छोटे होते हैं | मानव दोनों प्रकार का आहार करता है | कहाँ तक मानव समझा है? शिक्षा विधि में प्रस्तावित कहाँ है? क्या है सोचना पड़ेगा। इन सभी बातों पर ध्यान देते हैं तो पता चलता है कि मानव शाकाहारी है | इसी आधार पर मानव जाति एक होना समझ में आता है | मानव शाकाहारी होने के आधार पर अभी तक प्रतिबद्धता नहीं हुई | जितने भी शरीर धर्म को पढते हैं, डाक्टर कहलाते हैं | इनमें से सर्वाधिक लोग शाकाहार के पक्ष में नहीं हैं | मांसाहार के पक्ष में हैं | दूध को मांसाहार कहते हैं, जबकि दूध शरीर से निष्पन्न विसर्जित वस्तु है | उसको पाकर बच्चे बड़े होते हैं | बड़े लोग पुष्ट होते हैं | मल, मूत्र भी विसर्जित होता है | यह केवल पुरुष शरीर में होता है | स्त्री शरीर में, मनुष्यों में और जीवों में भी दूध होता है | सन्तान के अर्थ में होता है | यदि अधिक होता है ,उसे बड़े लोग भी सेवन करते हैं | इस प्रकार दूध सबको सेवनीय हुआ समझ में आता है | यह समझ में आना ही ज्ञान है | ज्ञान के आधार पर वस्तु को पहचानना, उपयोग करना, सदुपयोग करना, ज्ञानावस्था की इकाई का है | समझ के आधार पर सबका उपयोग होता है, सदुपयोग होता है | समझ के बिना उपयोग, सदुपयोग होता ही नहीं | हर मानव अपने को ज्ञानी मानता है | अज्ञानी भी ज्ञानी मानता है | ज्ञानी तो मानते ही हैं, साथ में सेवा ग्रहण करने योग्य मानते हैं ज्ञानी लोग | यह सोचने का मुद्दा है जबकि समाधान, समृद्धिपूर्वक जीने के लिये, ज्ञान के लिये विकल्पात्मक अध्ययन प्रस्तुत है | समृद्धि के लिये श्रम | श्रम मुक्ति ही सर्वाधिक आरामदायक माना है | श्रम के बिना उत्पादन होता नहीं | कुछ लोग श्रम करें

कुछ लोग न करें ये कैसा होगा? यह सोचने पर पता चलता है कि हर तबके को, ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी तीनों को श्रम करने की आवश्यकता है | इसमें एकाधिकार नाम की चीज समाप्त हो जाता है |

उसके अधिकार में अथवा इस प्रसंग में प्रमाण रूप में हम स्वयं चेतना विकास देखा है | उसे सर्वजन स्वीकृति के लिये प्रस्तुत किया है | इसमें प्रमाण में छत्तीसगढ़ प्रदेश में अछोटी नाम के गाँव में रहने के लिये जगह, प्रकाश और जल की व्यवस्था, खाना बनाने की व्यवस्था, खाना बनाकर देने की व्यवस्था किया है | इसी में आकर के लोग अध्ययन करते हैं | खाने, पीने के सम्बंध में जो कुछ भी व्यय होता है उसे वहन करते हैं | इस प्रकार से बिना किसी व्यय के रहना, प्रकाश व्यवस्था पाना सहज है | इसको देख करके इसी प्रकार से व्यवस्था देने वाले भी आशा कर रहे हैं; इसी प्रकार की व्यवस्था होना चाहिए | इससे पता चलता है कि यह अनुसंधान मानव को स्वीकृत है | इसका ग्रहण विधि से अभ्यास है | लोकव्यापीकरण होना सम्भव है | इसको प्रतिपादित करने वाला शरीर वेतन-विहीन है | प्राइमरी स्कूल में अक्षर अभ्यास कराने वाला भी वेतन के बिना करता नहीं | प्री-प्राइमरी में पढाने वाला अध्यापक भी वेतन-मुक्त विधि से कार्य करता हुआ देखने को नहीं मिलता है | इसे शोध कर सकते हैं | इस विधि से मानव एक जाति होना, एक लक्ष्य होना, अध्ययन और आचरण विधि से एक होना देखा जाता है | इसी का नाम अखण्ड समाज है | समुदाय को हम अखण्ड नहीं बताया | इसे हर व्यक्ति शोध कर देख सकता है | आज यदि एक व्यक्ति इसका अध्ययन करने से मुखरता है, कल स्वीकारेगा, इसको भी प्रेक्टिकल कर देखा गया है |

जीने के क्रम में सर्वप्रथम नियम आता है | व्यवहार के नियम में सामाजिक नियम | इसी को चरित्र कहा | यह अनुकरण-अनुसरण विधि से सर्वप्रथम होना पाया जाता है | इसे स्वीकारने के लिए विकल्पात्मक विकसित चेतना, जीवन, जीवन के कार्यक्रम, अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था का अध्ययन आवश्यक है | यह शास्त्राध्ययन से शुरुआत होता है | जीने में द्वितीय आता है, संबंधों को पहचानना | यह परिवार से आरम्भ होकर कुटुंब एवं समाज तक जाता है | इसके लिए संबंधों को प्रयोजनों के अर्थ में पहचानना होता है | अभी सम्बन्ध प्रियाप्रिय – संवेदनाओं के आधार पर पहचानता है, जीवन चेतना विधि से | सम्बन्ध पहचानने को ही न्याय कहा है | यह साक्षात्कार पूर्वक ही आता है, अन्यथा नहीं आता है | साक्षात्कार मनन एवं अभ्यास के सघनता से आता है | तृतीय आता है समाधान को पहचानना, अर्थात नियम नियंत्रण, संतुलन, न्याय धर्म सत्य पूर्वक जीना – यह बोध पूर्वक आता है | बोध न्याय धर्म सत्य का ही होता है – नियम बोध, अस्तित्व बोध, जीवन बोध, जागृति बोध ही होता है | यह बुद्धि के पूर्ण जागृति से होता है | जागृति सहज प्रभाव में जीवन में समाधान प्रभावशाली हो जाता है | फिर आता है सत्य पूर्वक जीना | सत्य बोध के बाद ही सत्य में अनुभव होना होता है | सत्य बोध यदी नहीं है, अनुभव होना संभव ही नहीं है | सत्य को बताया - सहअस्तित्व | सत्ता में संपृक्त प्रकृति सहज अनुभव के बाद जीवन सत्यमय हो जाता है | यह आचरण में व्यक्त होना ही प्रेम एवं पूर्णता है, आचरण का | क्रम से अनुभवमूलक न्याय धर्म सत्य पूर्वक जीना ही प्रमाण है | यही जीना का क्रम है, अनुभव क्रम है, अनुभव मूलक प्रमाण क्रम है | यही विकसित चेतना सहज ज्ञान आचरण एवं प्रमाण है |

जय हो, मंगल हो, कल्याण हो |

- **ए. नागराज | प्रणेता एवं लेखक | मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद) | दिव्य पथ संस्थान(भजनाश्रम) | अमरकंटक | जिला-अनूपपुर(म. प्र.)**